श्रीलंका
कर्ज चुकाते बंदर

प्रदेश की राजनीति में ग्वालियर
चंबल संभाग की भूमिका

विश्व में भारत
का बढ़ता वर्चस्व

विकासोन्मुखी जनचेतना का मुखर स्वर
मासिक

प्रगति सोपान

वर्ष 15 अंक 1 मई 2023 मूल्य : 20 रुपये

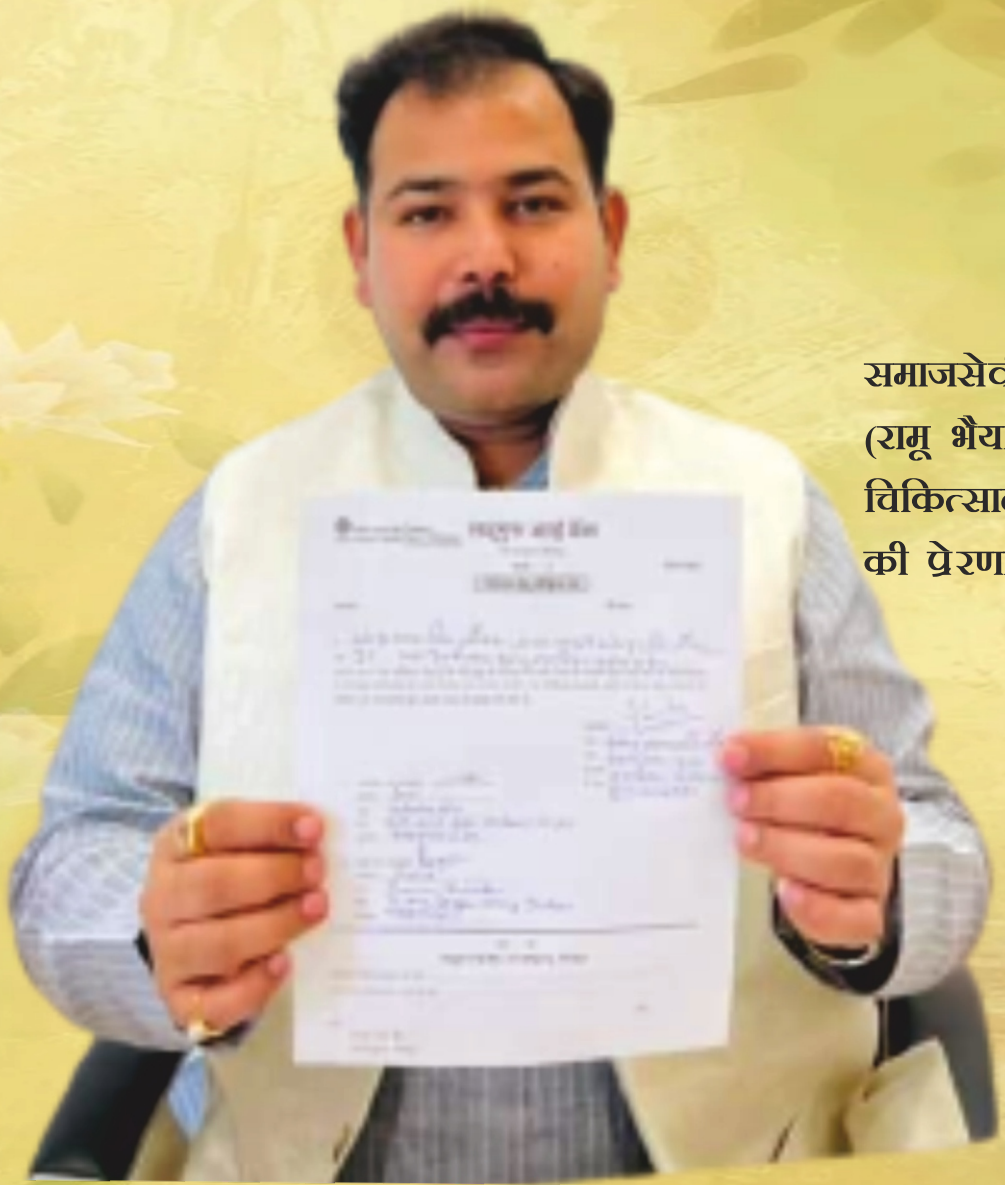

समाजसेवी श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भैया) चित्रकूट के सद्गुरू नेत्र चिकित्सालय में युवाओं को नेत्रदान की प्रेरणा देते हुए.

मैंने तो कर दिया है...
क्या आप भी...?

www.pragatisopan.com

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यु मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* डिजिटल संस्करण ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

शत् शत् नमन

प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर

स्व. श्रीमती विजय कुमारी सक्सेना

प्रगति सोपान पत्रिका परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजली

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यु मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूर्ण संस्करण प्राप्त करें।
* डिजिटल संस्करण ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

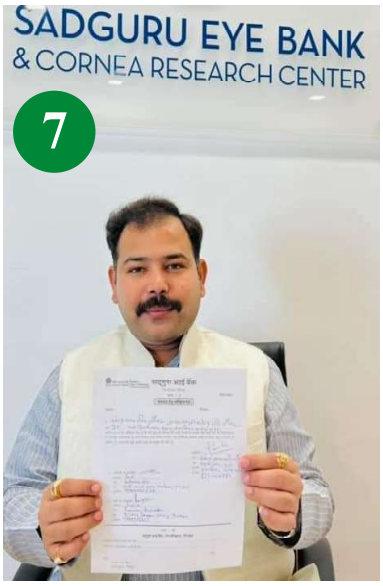

प्रगति सोपान

वर्ष 15 अंक 1 : मई 2023

- संपादकीय 2
- विश्व में भारत का बढ़ता वर्चस्व 4
- मैंने तो कर दिया है... क्या आप भी...? 7
- श्रीलंका : कर्ज चुकाते बंदर 9
- महिलाओं को स्वावलंबी बनाती सरकारें 12
- भारतीय नायक : बाबा साहब 13
- प्रदेश की राजनीति में ग्वालियर चम्बल संभाग की भूमिका 15
- विपक्ष की एकजुट होने की कोशिश में मुश्किलें 16
- शोध : भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी साहित्य की भूमिका 18
- धर्म पर आस्था 20
- ऑस्कर का अर्थशास्त्र 22

सम्पादक
अभिषेक सक्सेना

उप–सम्पादक
दीपक शर्मा

ब्यूरो चीफ
विभोर सक्सेना

सम्पादकीय सम्पर्क :
एल–937, दर्पण कॉलोनी,
ठाटीपुर, ग्वालियर – 474 011
वेब : **www.pragatisopan.com**

डिजाइन : शिवानी कम्प्यूटर ग्राफिक्स, ग्वा.

मौलिक लेख आमंत्रित हैं। कृपया लेखों को स्वच्छ तरीके से लिखकर प्रेषित करें। ई–मेल भी कर सकते हैं।
ईमेल : editor.pragatisopan@gmail.com

समस्त विवादों के लिए न्याय क्षेत्र–ग्वालियर

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

संपादकीय...

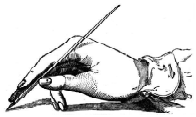

श्री देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भैया) ग्वालियर एवं चंबल क्षेत्र के नेता हैं। अपनी कार्यशैली से हर किसी के दिल पर राज करते हैं। देवेन्द्र प्रताप का जन्म आर्य नगर मुरार में दिनांक 17 फरवरी 1986 को हुआ था। इनका बचपन से ही दादा जी स्वर्गीय मुंशी सिंह जी तोमर एवं दादी माँ शारदा देवी से विशेष स्नेह रहा है। पिता श्री नरेन्द्र सिंह तोमर एवं माँ श्रीमती किरण तोमर के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इन्होंने ग्वालियर से शिक्षा ग्रहण की है। बचपन से ही घर में राजनीति एवं समाजसेवा का माहौल देखा, उसका इनके जीवन पर अमिट प्रभाव पड़ा। इनकी राजनीति एवं समाजसेवा के अतिरिक्त खेलों में विशेष रूचि रही है। धार्मिक माहौल में पले बड़े देवेन्द्र की रूचि धार्मिक आयोजनों में भी देखी गई है।

श्री नरेन्द्र तोमर द्वारा ग्वालियर, मुरैना, डबरा व मुरार आदि कई स्थानों पर रामकथा का आयोजन किया गया है, जो सतत् जारी है। इन आयोजनों में माँ कनकेश्वरी देवी जी की उपस्थिति से भक्तों की भारी संख्या आती रही है। देवेन्द्र द्वारा अन्य कार्यकर्ताओं के साथ आयोजनों को सफल बनाने के लिए अथक प्रयास किए जाते हैं। कथा स्थल पर भक्तों को आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करने के अलावा स्वच्छता पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

अनुभव और ज्ञान प्राप्त करने का एक सही माध्यम देशाटन है। देवेन्द्र सिंह द्वारा भारत के अधिकांश भागों में देशाटन कर अनुभव प्राप्त किए हैं एवं धार्मिक स्थानों की यात्रा कर आशीर्वाद प्राप्त किया है। अभी हाल ही में धर्मशाला जाकर पूज्य बौद्ध धर्म गुरू दलाई लामा का आशीर्वाद प्राप्त किया है।

देवेन्द्र सिंह मध्यप्रदेश भारतीय जनता युवा मोर्चा के सदस्य के रूप में चंबल व ग्वालियर संभाग में कई आयोजनों में भागीदारी कर युवाओं के प्रेरणास्त्रोत बन गए हैं। कोरोना महामारी के समय इन्होंने लोगों की भरपूर मदद की है। कई अस्पतालों में मरीजों से संपर्क बनाए रखा। मरीजों को दवा आदि की आवश्यकता होने पर पूर्ण सहयेाग दिया है। गरीबों को आवश्यक भोजन एवं अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाने में भरपूर योगदान दिया है। निष्काम भाव से सेवा करना उनकी आदत है। समय–समय पर रक्तदान शिविरों का आयोजन कर एवं नेत्रदान हेतु लोगों को जागरूक कर, वे युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बन गए हैं।

देवेन्द्र प्रताप सिंह हॉकी मध्य भारत के अध्यक्ष के रूप में अच्छा कार्य कर चुके हैं। उनकी मेहनत व लगन का नतीजा है कि उन्हें हॉकी इंडिया का वाइस प्रेसिडेंट चुना गया है। यह ग्वालियर व मध्यप्रदेश के लिए गौरव की बात है। यह पहला मौका है जब मध्यप्रदेश के किसी व्यक्ति को यह सम्मान प्राप्त हुआ है।

श्री देवेन्द्र प्रताप भारत में हॉकी की दुनिया में एक बड़े नाम के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा ग्वालियर में सीनियर पुरूष हॉकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप 2019 का सफल आयोजन किया गया। वह हॉकी को भारत में एक खेल के रूप में नई ऊँचाइयों तक ले जाने में सफल रहे हैं।

खेल जगत में उन्हें आदर और सम्मान प्राप्त है। उन्हें मध्यप्रदेश हैंड बाल एसोसिएशन का संरक्षक बनाया गया है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्मदिन पर प्रतिवर्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम संयोजक देवेन्द्र प्रताप सिंह द्वारा देश के प्रतिष्ठित विद्वानों,

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

कलाकारों व कवियों को आमंत्रित कर आयोजन को भव्यता प्रदान की गई है। ऐसे कार्यक्रमों से लोगों को माननीय अटल जी को याद कर श्रद्धासुमन अर्पित करने का अवसर प्राप्त होता है। उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है।

भारत एक युवा देश है। जिस देश का युवा विनम्र, शिक्षित एवं मेहनती होगा वह राष्ट्र सदैव तरक्की के रास्ते पर चलता रहेगा। हमारी युवा पीढ़ी हर क्षेत्र में अग्रणी है जो देश की तरक्की में चार चांद लगा रही है।

देवेन्द्र प्रताप स्वभाव में सरल, सौम्य व अपने पिता की तरह धैर्यवान हैं। लोगों से स्नेह पूर्वक मिलना व उनका सहयोग करना उनके स्वभाव में है। अपने पिता के पदचिन्हों पर चलते हुए समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति का साथ देने के कारण वह आज आमजन के दुलारे बन गए हैं। समाज को उनसे काफी उम्मीदें हैं। अपने पथ पर सतत् आगे बढ़ते रहें यही हम सब की कामना है।

भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं !
हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नही !!

– अभिषेक सक्सेना

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

विश्व में भारत का बढ़ता वर्चस्व

आज भारत ने तेजी से अपनी 'साफ्ट स्टेट' की छवि से आगे बढ़कर, मजबूत एवं स्पष्ट हितों वाले देश के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर ली है। भारत की मुखर विदेश नीति एवं भारतीय विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर के समय समय पर वैश्विक शक्तियों को आईना दिखाने वाले जवाबों ने सबका ध्यान आकर्षित किया है।

भारत ने अपने संघर्ष एवं कूटनीति के बल पर आज एक ऐसा मुकाम हासिल किया है कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् का स्थायी सदस्य न होते हुए भी आज भारत की बात को ध्यान से सुना जाता है एवं विश्व के अधिकांश स्थायी एवं अस्थायी सदस्य भारत के विचारों या पक्ष को जानने के लिए लालायित रहते हैं।

पूर्व में भारत की विदेश नीति एक लंबे हिचकिचाहट के दौर से गुजरी है जिसमें भारत अपने कद एवं संभावनाओं को बहुत कमतर रखते हुए विश्व मंच पर अपने आप को सही रूप में रखने में असमर्थ रहा था। वर्ष 1947 में कश्मीर के मुद्दे को संयुक्त राष्ट्र में ले जाना, शीत युद्ध के दौरान चीन एवं रूस के बीच की दूरियों को सही समय पर भांपने में गलती करना, अक्साई चिन एवं अरूणाचल के मुद्दे पर चीन के इरादों को नही समझ पाना, अमेरिका एवं चीन के लिए पाकिस्तान की जरूरत को गंभीरता से नहीं लेना, ये सब पूर्व में भारतीय विदेश नीति की वैश्विक अपरिपक्वता को दर्शाता है। ऐसी गलतियों के कारण ही आजादी के बाद भारत के साथ वैश्विक पटल पर एक पक्षपाती रवैया कायम रहा एवं भारत जैसे इतने बड़े लोकतंत्र के हितों को वह स्थान नहीं दिया गया जिसका वह अधिकारी था। वर्ष 2014 के बाद से इस परिस्थिति में व्यापक परिवर्तन दिख रहा है।

भारतीय विदेश नीति में अभूतपूर्व परिवर्तन तब आना प्रारंभ हुआ जब केन्द्र में 2014 में भाजपा की

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

सरकार बनी। यह दौर अपने हितों को आगे रखते हुए शक्तिशाली निर्णयों का एवं ऊर्जावान कूटनीति का है। विदेश मंत्री डॉ. जयशंकर के अनुसार, यह स्वर्णिम दौर भारत के लिए क्रान्तिंकारी परिवर्तन का प्रारंभिंक दौर है।

वर्तमान में भारत की विदेश नीति निम्नलिखित प्रमुख बिंदुओं पर कार्य कर रही है।

इसमें पहला मुख्य बिंदु है यथार्थवाद। वर्तमान विदेश नीति पूरी तरह से यथार्थवादी है, जिसका उदाहरण हमें यूक्रेन संकट के दौरान रूस के साथ कच्चे तेल की खरीद जैसे निर्णयों में देखने को मिलता है। यानि कि अपने कमजोर व मजबूत पक्षों को समझते हुए एक पक्षीय प्रोपगैंडा या वैश्विक दवाब में न आकर अपने हितों को समझते हुए निर्णय लेना।

इसका दूसरा प्रमुख बिंदु है अर्थव्यवस्था संचालित कूटनीति। जैसे वर्तमान में भारत की विदेश नीति देश के आर्थिक हितों को बहुत महत्व दे रही है। वास्तव में प्रमुख वैश्विक शक्तियों को देखा जाए तो वे अपनी विदेश नीति में आर्थिक पक्ष को सर्वोपरि रखती हैं, जैसे कई विदेशों के सर्वोपरि नेता प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति इत्यादि विदेशों में जाकर अपने देश के उत्पादों व प्राइवेट कंपनियों को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं। इसके साथ ही स्वतंत्रता के पूर्व और उसके बाद के दौर में हुए अनेक वैश्विक आर्थिक बदलावों से सबक लेते हुए भारत ने संरक्षणवादी बाजार पद्धति को त्याग कर समावेशी वैश्वीकरण को स्वीकार किया है।

इस नई विदेश नीति का तीसरा महत्वपूर्ण बिंदु है बहुध्रुवीय वैश्विक क्रम को स्वीकार करना व इसकी पैरवी करना। भारतीय विदेश नीति की सफलता को हम इस रूप में देख सकते हैं कि रूस–युक्रेन के युद्ध के समय उसने परस्पर विरोधी वैश्विक खेमों में भी अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराते हुए एक वैश्विक साम्य स्थापित किया है। ऐसे तनावपूर्ण समय में भी भारत ने शंघाई कॉरपोरेशन एवं क्वाड आदि समूहों में प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। शंघाई कॉरपोरेशन रूस व चीन वाले पक्ष का मंच है जबकि क्वाड अमेरिका द्वारा चीन की घेराबंदी करने के लिए बनाया गया संगठन है। रूस–युक्रेन युद्ध के इस दौर में, भारत एक ओर जहाँ पश्चिमी देशों के दवाब के आगे न झुककर अपने हितों के अनुसार रूस से व्यापार बढ़ाता जा रहा है, वही दूसरी ओर वैश्विक मंचों पर रूस को नसीहत देने से भी नहीं चूकता कि यह दौर युद्ध का नहीं है।

इसका चौथा बिंदु उचित जोखिम है। यह इतिहास का विषय है कि जोखिम वाली विदेश नीतियों ने कम लाभ दिया है। ऐसे में जब भारत को विश्व पटल पर तेजी से आगे बढ़ना है, तो जोखिम तो उठाना ही होगा। आज भारतीय विदेश नीति उचित जोखिम उठानें में व बड़ी वैश्विक शक्तियों के दवाब के आगे भी अपना हित आगे रखने में नहीं हिचकिचाती। बीते कुछ समय से भारत अपनी कूटनीति व दृढ़ता से संयुक्त राष्ट्र में सुधार के लिए विश्व शक्तियों पर दबाव बना रहा है और काफी हद तक इसमें सफल भी रहा है। इस मुद्दे पर विश्व के अधिकांश देश भारत के साथ खड़े हुए दिखते है। भारत अपनी बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होना और एक उभरते हुए तीसरे ध्रुव के प्रमुख नेता होने के बिन्दुओं को अपने पक्ष में प्रदर्शित कर, स्वयं के लिए सुरक्षा परिषद् में वीटो की मांग के लिए शक्तिशाली देशों पर लगातार दबाव बना रहा है। और वही दूसरी ओर वीटो पावर जैसे भेदभाव वाले नियमों को अन्यथा पूरी तरह से हटाने की पैरवी करके कूटनीतिक रूप से शेष देशो को अपने पक्ष में खड़ा कर रहा है जिससे वैश्विक शक्तियों पर भारत के पक्ष में दबाव बन रहा है।

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

पांचवा बिंदु है वैश्विक परिस्थितियों के अनुसार निर्णय। वैश्वीकरण के परिदृश्य में एक अच्छी विदेश नीति उसे माना जाएगा जिसमें दूरगामी वैश्विक संभावनाओं, उचित जोखिमों एवं प्रतिफल की वैश्विक स्तर पर अच्छी समझ हो। वैश्विक समझ के अभाव में बनाई गई नीतियां उस देश के लिए अहितकारी हो सकती हैं। आज भारतीय विदेश नीति की वैश्विक स्तर पर सराहना होती है। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर विश्व के प्रमुख कूटनीतिज्ञों में माने जाते हैं। यहाँ तक कि पाकिस्तान जैसे विरोधी देश के नेता भी भारत की रूस–युक्रेन युद्ध में संतुलित नीति की यदा कदा प्रशंसा करते हुए दिख जाते हैं।

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर की अगुआई में विदेश मंत्रालय भारत की कूटनीतिक शक्ति को लगातार मजबूत करने का प्रयास कर रहा है। बीते दिनों मंत्री डॉ. जयशंकर ने कहा, ''आने वाले समय में भारतीय राजनयिक भारत की वैश्विक पहचान एवं हितों को ओर अधिक मजबूती से विश्व मंच पर रखते हुए दिखेंगे। ऐसे भारतीय राजनयिक भारत के बड़े लक्ष्यों की पूर्ति करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेंगे।''

विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर परिवर्तनशील विश्व में भारत के बढ़ते वर्चस्व के लिए सरकार की नीतियों एवं प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को श्रेय देते हैं। श्री मोदी ने ही जयशंकर जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति पर विश्वास जताकर, उन्हें विदेश मंत्री के पद की जिम्मेदारी देकर, इस बदलाव को गति दी है, और अब भारत अपनी पहचान हाथी की जगह शेर के रूप में बना रहा है।

ये कैसा पक्षपाती वैश्विक तंत्र है जहां पिछले ७५ सालों से ५ देश संस्थागत रूप से, मनमाने तरीके से, संयुक्त राष्ट्र के प्रस्तावों को एक तरफा खारिज करवा सकते है और विश्व के बाकी बचे देश कुछ नहीं कर सकते। यही वीटो पावर है, जो सिर्फ संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्यों को दी गयी है। ये देश यानि कि अमेरिका, रूस (पूर्व में सोवियत संघ), ब्रिटेन, फ्रांस और चीन संयुक्त राष्ट्र के किसी भी प्रस्ताव को, वीटो शक्ति (Veto Power) का उपयोग कर, खारिज करवा सकते हैं।

जैसे समय समय पर चीन वीटो पावर का दुरूपयोग करके आतंकवादी मसूद अजहर को बचाता रहता है और इसकी कोई जवाबदेही भी नहीं है। वर्तमान रूस–यूक्रेन संकट में रूस के विरुद्ध पश्चिमी देशों की संयुक्त राष्ट्र के स्तर पर लामबंदी को रूस वीटो के सहारे अकेला ही निष्प्रभावी कर रहा है। अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस भी अपने हितानुसार यदा–कदा वीटो पावर के द्वारा संयुक्त राष्ट्र पर नकेल कस देते हैं। इसके विपरीत, विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र, पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सवा करोड़ लोगों का राष्ट्र भारत वीटो विहीन है। ये स्थिति वैश्विक लोकतंत्र की अवधारणा के बिलकुल विपरीत है।

पर अब ऐसा लगता है कि भारत इस स्थिति को और इस वैश्विक पक्षपात को और अधिक सहन करने के मूड में नहीं है। भारत मुखर तरीके से इस मुद्दे पर कूटनीति कर रहा है और बिना हिचकिचाहट के इन स्थायी सदस्यों को घेर रहा है, क्योकि शायद यही सही समय है जब भारत की सबको जरूरत है। भारत एक बड़ी ताकत के रूप में स्थापित हो रहा है और सभी भारत को अपने पक्ष में रखना चाहते हैं। भारत भी बड़ा कूटनीतिक दांव खेल चुका है कि – **या तो भारत को वीटो पावर दो या फिर इस पक्षपाती वीटो पावर का नियम ही हटाओ**।

भारत इन परस्पर विपरीत सुझावों को भी अपनी कूटनीतिक समझ और दमदार विदेश नीति के बल पर आगे बढ़ाने में सफल प्रतीत हो रहा है। एक तरफ जहां स्थायी सदस्य भारत के सामने दवाब में आ रहे हैं और वहीं बाकी तमाम छोटे छोटे देश, जिनके हितों को कोई उचित प्रतिनिधित्व नहीं मिल रहा है, वो इस मुद्दे पर भारत के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं।

– सारिका सक्सेना

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

मैंने तो कर दिया है... क्या आप भी...?

कहते हैं कि युवा पीढ़ी गलत दिशा में जा रही है, पर साथ साथ हम ये भी देखते हैं कि हमारे चारों तरफ जितनी भी विसंगतियां हों पर कोई ना कोई अपने अच्छे कार्यों का प्रभाव डालता ही है।

इसी तरह सुमार्ग पर चलकर कुछ लोग समाज हित के लिए बेहतर कार्य कर रहे हैं। एक तरफ हमें आसानी से देखने को मिल जाता है कि राजनेताओं के पुत्रों का व्यवहार जनता के साथ किस तरह का होता है, लेकिन एक तरफ केन्द्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर के सुपुत्र देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर (रामू भईया) निरंतर ग्वालियर एवं चंबल संभाग में समाज के लिए बेहतर कार्य करते हुए दिखाई देते हैं, चाहे शहर भर में साहित्यिक गतिविधि हो या अन्य कोई काम हो।

इसी क्रम में देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर एवं उनके साथियों ने चित्रकूट के सद्गुरु नेत्र चिकित्सालय में नेत्र दान कर कविता के माध्यम से जनमानस को भावनात्मक संदेश देते हुए कहा कि –

हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
किसी और की अमानत हो गई ये आँखें
सोये सपनों में जान भर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
मेरा धर्म है सम्हाल के रखूं अमानत को
सलामती का इंतज़ाम कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
तन्हाई में अश्कों की बारिश हुई
काले बादल में उजला चाँद कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
सूखे खेतों मे हरियाली आई न थी
उन खेतों में धान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जिनका, दुनिया देखने को भूखा था मन
सपनों के भट्ठी में नान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जाने के तुरंत बाद आएंगे आई बैंक वाले
सबके सामने ये ऐलान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
अंतिम इच्छा के साथ गर कर दिया रुख़सत
विकास को तुमने मेहरबान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया
जाने के बाद भी देखूँगा
इस सुन्दर धरा को
इन आँखों को ऐसे महान कर दिया
हां, मैंने नेत्र दान कर दिया।

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

ये भावनात्मक संदेश आज के युवाओं को प्रेरित करता है कि जीते हुए तो हम लोगों के लिए कार्य करते ही हैं, परन्तु हमें अगर एक मनुष्य का जीवन मिला है तो हम जितना भी इस मनुष्यता के लिए करें वो कम ही है। नेत्र दान कर रामू भईया एवं उनके साथियों ने जनता को संदेश दिया है कि हमारे पृथ्वी से जाने के बाद भी, हमारे कारण अगर किसी के जीवन में रंग भरा जा सकता है, किसी के जीवन को फिर से हरा भरा किया जा सकता है, किसी को जीवन के प्रति फिर से उत्साहित किया जा सकता है, और किसी के जीवन को फिर से सपनों से भरा जा सकता है, तो ये हमारा मानव धर्म भी है और समाज के प्रति कर्तव्य भी है।

ऐसे ही व्यक्तित्व आज के समाज में संतुलन बनाने का कार्य कर रहे हैं। समाज को ऐसे व्यक्तित्वों से जरूर प्रेरणा लेना आवश्यक है। जिससे कि हम इस समाज को एक नया आकार, मानवता के प्रति जागरूकता, मनुष्यता के प्रति संवेदनशीलता एवं सेवा का भाव दे सकें। एवं एक बेहतर समाज का निर्माण कर सकें, और आगे आने वाली पीढ़ी को एक बेहतर समाज दे सकें। और बड़ी खुशी की बात है कि देवेन्द्र सिंह तोमर (रामू भईया) इस कार्य में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं।

प्रेरणा...

गौरव श्रीवास्तव जी ने नेत्र दान के मौके पर अपनी माँ को याद करते हुए कहा कि –

मेरी माँ के आँखों में कैन्सर था और उनका इलाज मुंबई के टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल में वर्ष 1993 से 2003 तक चला। 2003 में उनके शांत होने पर मैंने आँखे दान करने का सोचा था, पर ऐसा अभी तक कोई अवसर नही मिला। लेकिन मैं आज धन्यवाद देना चाहूँगा भाई देवेन्द्र प्रताप सिंह तोमर का कि आज, जब हम सभी लोग चित्रकूट में सदगुरु सेवा संस्थान नेत्र चिकित्सालय थे, तो सबसे पहले रामू भाई ने नेत्र दान के लिए फार्म अंकित किया। तब मुझे ध्यान आया कि मुझे भी यह कार्य करना है।

जब नेत्र दान के लिए फार्म भरा तो उसके उपरांत काफ़ी शांति एवं सुकून का एहसास हो रहा है। और सभी से आग्रह करना चाहूँगा कि कुछ ऐसा दान करना चाहिए जिसका लाभ स्वयं के इस दुनिया से जाने के बाद अन्य परिवारों में रोशनी दे सके।

कई बार होता है कि हम जीवन में कुछ भी प्राप्त कर लें पर हमें वह मन की शान्ति नहीं मिल पाती है, जो शान्ति केवल इस समाज को कुछ बेहतर देकर ही मिल सकती है। माँ और पुत्र का रिश्ता इस धरती का सबसे सुंदर और पवित्र रिश्ता होता है। माँ के लिए कुछ करना हर पुत्र की इच्छा होती है। नेत्र दान करके गौरव श्रीवास्तव जी ने अपनी माँ के लिए स्नेह भरी श्रद्धांजली अर्पित की है। इस कार्य से, ऐसे पुत्र पर उनकी माता को भी गर्व होगा, जिसने किसी के जीवन में सपने भरने का कार्य किया है।

– दीपक शर्मा

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

श्रीलंका : कर्ज चुकाते बंदर

आर्थिक संकट और विदेशी कर्ज किसी देश को अमानवीय फैसले लेने पर भी विवश कर सकता है और इस परिस्थिति में वह ऐसा करने के लिए तर्क भी खोज लेता है। यह संभावना व्यक्त की जा रही है कि आर्थिक संकट में फंसे श्रीलंका ने एक अप्रत्याशित फैसला लिया है कि बंदरो की एक लुप्तप्राय प्रजाति चीन को निर्यात की जाएगी। मुख्य विषय यह नहीं है कि बंदरों को निर्यात किया जा रहा है, बल्कि वह संख्या है जो कि चिंता का विषय है। श्रीलंका ने खुलासा किया है कि वह अपने देश से एक लाख बंदरों को चीन ले जाने की संभावना पर विचार कर रहा है।

श्रीलंका के कृषि मंत्री महिंदा अमरवीरा ने कहा कि चीन ने चीन में चिड़ियाघरों के लिए एक लाख टॉक मकैक प्रजाति के बंदर मांगे हैं। पर चीन की छवि देखते हुए चीन की यह बात विश्वास करने योग्य नहीं है। चीन पूर्व में भी दवाई और मांस के लिए, कर्ज में फंसे पाकिस्तान से बड़ी संख्या में गदहों का आयात कर चुका है। अमरवीरा ने एक इंटरव्यू के दौरान बताया कि श्रीलंका अपने एक लाख बंदरों को चीन को निर्यात करने की तैयारी कर रहा है। गौरतलब है कि श्रीलंका आर्थिक तंगी के दौर में फंसा हुआ है।

बन्दर अन्य जानवरों की तुलना में मानव से काफी ज्यादा समानता रखते है। उनमें कुटुंब के प्रति प्रेम व अन्य मानवीय मूल्य बहुतायत में होते हैं। किसी एक बन्दर के पकड़ लिए जाने पर पूरे समूह में दुःख व्याप्त हो जाता है। अतः इस प्रकार से इतने बड़े स्तर पर बंदरों को पकड़ कर चीन को निर्यात करना अत्यंत अमानवीय कदम है जिसकी निंदा की जानी चाहिए।

टॉक मकैक बंदर श्रीलंका की स्थानीय प्रजाति है, जहां स्थानीय रूप से इसे 'रिलेवा' के नाम से जाना जाता है। भले ही यह श्रीलंका में संरक्षित नहीं है परंतु बंदरों की यह प्रजाति अंतर्राष्ट्रीय संघ (आई. यू. सी. एन) की लाल सूची में लुप्तप्राय के रूप में वर्गीकृत है। इस वजह से इतनी बड़ी संख्या में बंदरों को निर्यात करने को लेकर पर्यावरणविद् भी चिंता में हैं। इसका पर्यावरण समर्थित समूहों ने विरोध किया है। श्रीलंका के कृषि विभाग को यह निवेदन भेजा गया है।

चीन के एक प्रतिनिधिमंडल ने श्रीलंका के कृषि मंत्री महिन्द्रा अमरावीरा से कहा है कि कोलंबो 1 लाख मकैक बंदर उसे दे दे। चीन ने कहा कि वह इन बंदरों को पकड़ने का पूरा खर्च उठाएगा। हालांकि चीन का दावा है कि इन बंदरों को वह

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

चिड़ियाघरों में रखेगा। वहीं ब्रिटिश मीडिया का कहना है कि चीन 1 लाख बंदरों का इस्तेमाल अपनी खतरनाक वायरस और दवाएं बनाने वाली लैब में कर सकता है। इसीलिए श्रीलंका के इस फैसले की कड़ी आलोचना हो रही है। चीन अपनी इन कुख्यात लैब में बंदरों पर दवाओं, वैक्सीन, ट्रांसप्लांट, और मस्तिष्क तथा अन्य अंगों से जुड़ी संक्रामक बीमारियों से जुड़ा शोध करता है। इन बंदरों को इसलिए चुना जाता है क्योंकि वे काफी हद तक इंसानों से मिलते जुलते हैं।

हालांकि श्रीलंका लगभग सभी जीवित जानवरों के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाता है। पर भयंकर आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका ने इस साल अपनी संरक्षित सूची से कई प्रजातियों को हटा दिया था जिसमें बंदर प्रजातियाँ भी शामिल हैं।

श्रीलंका सरकार ने बंदरों को भेजने पर सहमति तो जताई है, लेकिन अपने बचाव में सरकार का कहना है कि वह एकसाथ बंदरों को नहीं भेजेगी। श्रीलंका की सरकार के इस फैसले की वजह बंदरों की बढ़ती संख्या का फसलों पर बुरा असर बताया जा रहा है और बहुत से लोग इसे सरकार की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था से जोड़ कर देख रहे हैं।

एक बात और कि बंदरों के लिए यह मांग चीन से अधिकारिक तौर पर न आकर किसी चीनी कंपनी के माध्यम से आयी है और जबकि चीन ने अधिकारिक तौर पर इस डील की जानकारी होने से इनकार किया है। यानि कि सीधी जिम्मेदारी व प्रश्नों से अभी के लिए अपना पल्ला झाड़ लिया है। इस फैसले को लेकर कोलम्बो में मौजूद चीनी एम्बेसी ने कहा कि वह इस मामले को लेकर किसी तरह की जानकारी नहीं रखते हैं।

हमारी भारतीय संस्कृति में बंदरो का एक विशेष स्थान व सम्मान तो है ही। पर श्रीलंका में भी कुछ समुदायों में व बौद्धों में बंदरों को श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता है। चीन में भी मंकी गॉड के रूप में सम्मान होता है। पर आर्थिक स्वार्थ और कर्ज के मायाजाल के सामने सारी संवेदनाये, श्रद्धा पीछे छूटती हुई दिखाई देती है।

हालांकि यह भारत का आन्तरिक मुद्दा नहीं है, लेकिन भारत जो कि वैश्विक और जिम्मेदार शक्ति है एवं वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ मानवीय मूल्यों का समर्थन करता है, ऐसे भारत को इस मुद्दे पर इस डील के विरूद्ध दबाव बनाना चाहिए। ताकि इतनी बड़ी संख्या में बंदरो को उनके परिवार से अलग करके चीन की अमानवीय प्रयोगशालाओं में न भेजा जाए।

– अजय सक्सेना

ये धरती, ये प्रकृति, ये जंगल, इन जानवरों के भी हैं। और अगर लोगों में संवेदनाएं हैं तो फिर क्या सरकारों को ऐसे निर्णयों के विरुद्ध बाध्य नहीं किया जा सकता?

प्रगति सोपान पत्रिका इस विषय पर संवेदनशील पर्यावरण प्रेमियों के साथ खड़ी है और आम जन से भी अनुरोध करती है कि वो श्रीलंका में वानर जाति पर इतने गंभीर संकट के विरुद्ध भारत में भी एक माहौल बनाएं। आज जब पूरा विश्व सोशल मीडिया के द्वारा जुड़ा हुआ है, तो इस प्रकार की मुहिम का प्रभाव देश की सीमाओं के बाहर भी अवश्य होगा। आपके द्वारा व्यक्त किया गया एक विचार, कई अन्य लोगों की प्रतिध्वनि से गूंजते हुए, विरोध के स्वर को तेज करेगा।

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यू मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* इस डिजिटल संस्करण को ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

मे० तोताराम हरीराम सर्राफ

सोने चांदी के आभूषणों के
निर्माता एवं विक्रेता

प्रो० दिनेश कुमार गुप्ता
सदर बाजार
गोहद, जिला भिंड

आभूषण दिलवाए, घर की लक्ष्मी को सजाएं।

जय श्री कृष्णा

आपकी संतुष्टि ही हमारा ध्येय है

जय श्री कृष्णा

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यु मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* डिजिटल संस्करण ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।

भारत माता मंदिर लहार

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : अभिषेक सक्सेना द्वारा जनता ऑफसेट प्रिन्टर्स, शिन्दे की छावनी, ग्वालियर से मुद्रित एवं एल–937, दर्पण कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर से प्रकाशित। सम्पादक– अभिषेक सक्सेना।

* ये डिजिटल संस्करण का प्रीव्यु मात्र है जिसमें सीमित पृष्ठ उपलब्ध हैं। सारे पृष्ठ पढ़ने के लिए www.pragatisopan.com से पूरा संस्करण प्राप्त करें।
* डिजिटल संस्करण ऑनलाइन पढ़ने हेतु बेहतर बनाने के लिए यह पेपर संस्करण से थोड़ा अलग हो सकता है।